

DODD, MEAD & COMPANY • NEW YORK • 1955



# The Little Tailor

BY WILLIAM GROPPER

छोटा दर्जी

विलियम ग्रोपर

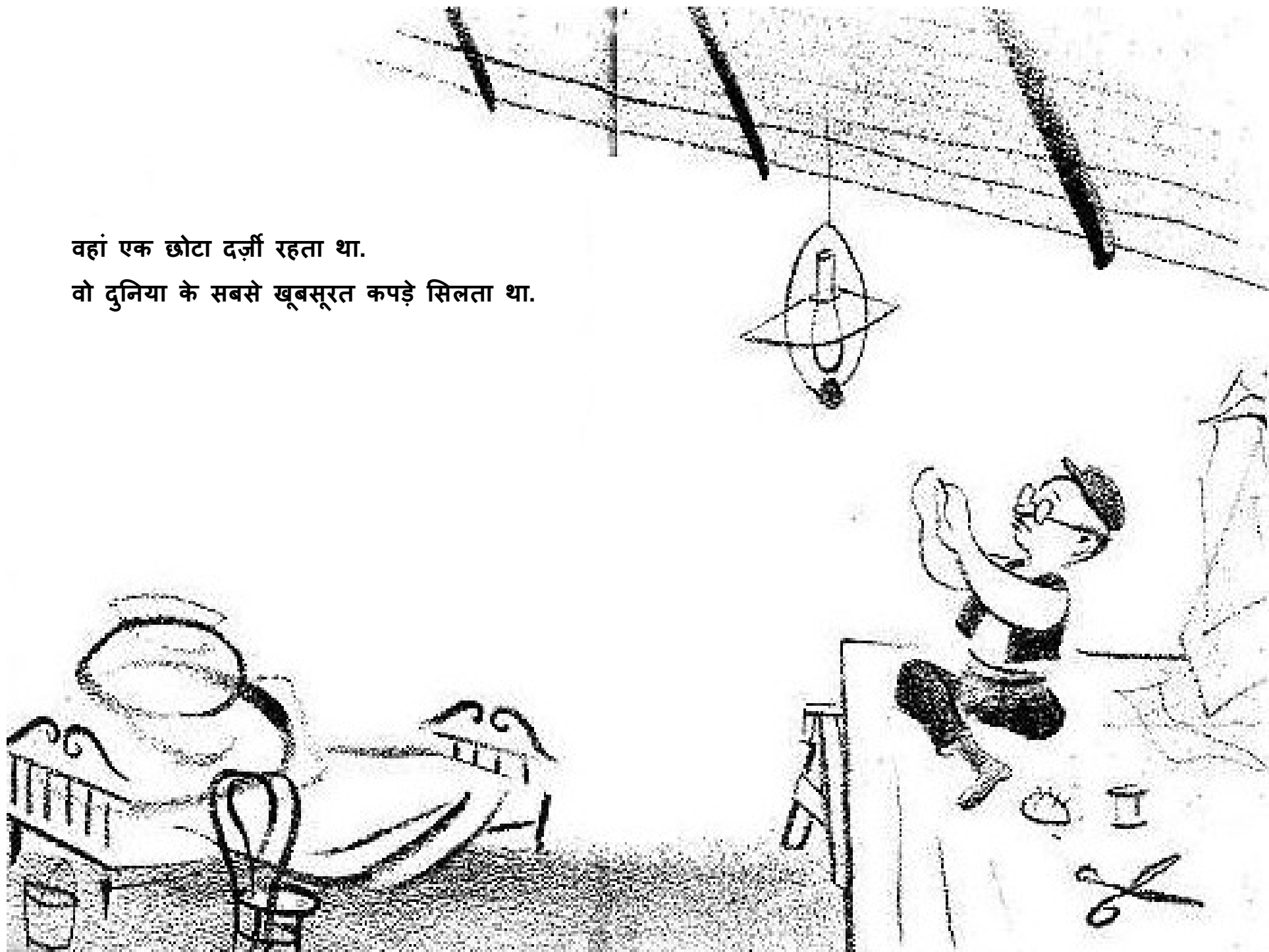
हिंदी: विदूषक

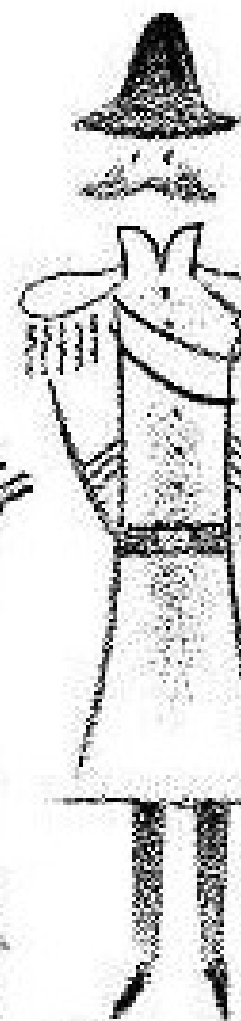


बहुत साल पहले, एक छोटे सा शहर था.  
उसका नाम नोशी था. वो यूरोप के एक देश के  
कोने में बसा था.

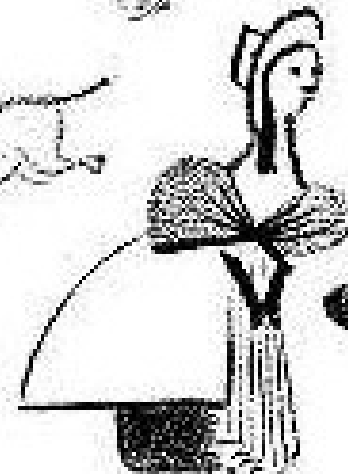
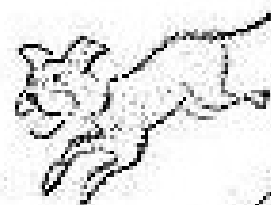
वहां एक छोटा दर्जी रहता था.

वो दुनिया के सबसे खूबसूरत कपड़े सिलता था.



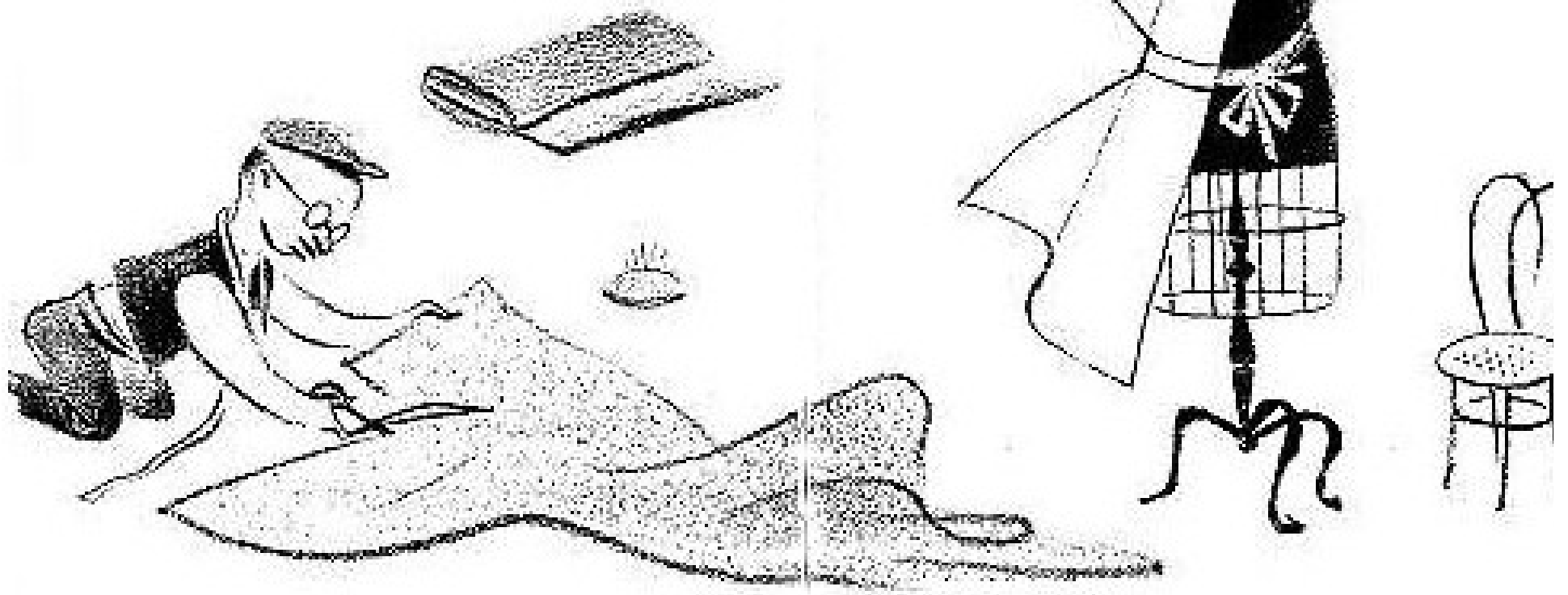


देश के कोने-कोने से लोग उसके पास  
कपड़े सिलवाने के लिए आते थे.



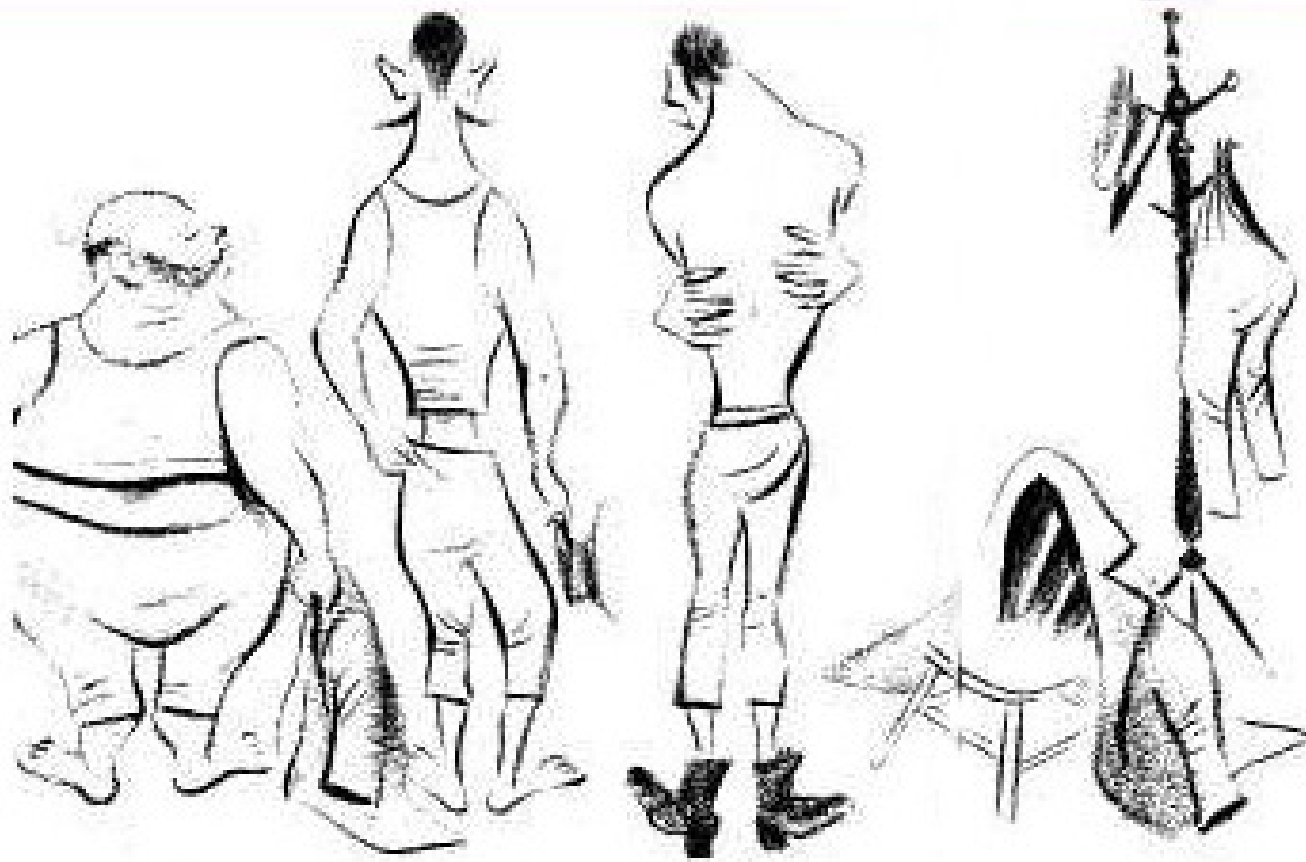
वो थान से काट कर ऐसे सुन्दर कपड़े बनाता था,  
जिससे साधारण आम लोग भी, एकदम शाही लगने  
लगते थे. वो आम मजदूरों, कारीगरों के लिए भी ऐसे  
कपड़े सिलता जिससे उनके पेशे की इज्जत बरकरार  
रहती और लोग उनका आदर करते.

वो सभी तरह की महिलायों के लिए ऐसे आकर्षक  
और सुन्दर कपड़े सिलता जिससे वो अपनी उम्र से  
कम दिखतीं.



उस छोटे दर्ज़ी के कपड़े पहनने के बाद ऊंचे तबके  
के सरकारी अफसर या किसी आम आदमी में कोई  
फर्क नहीं लगता था.



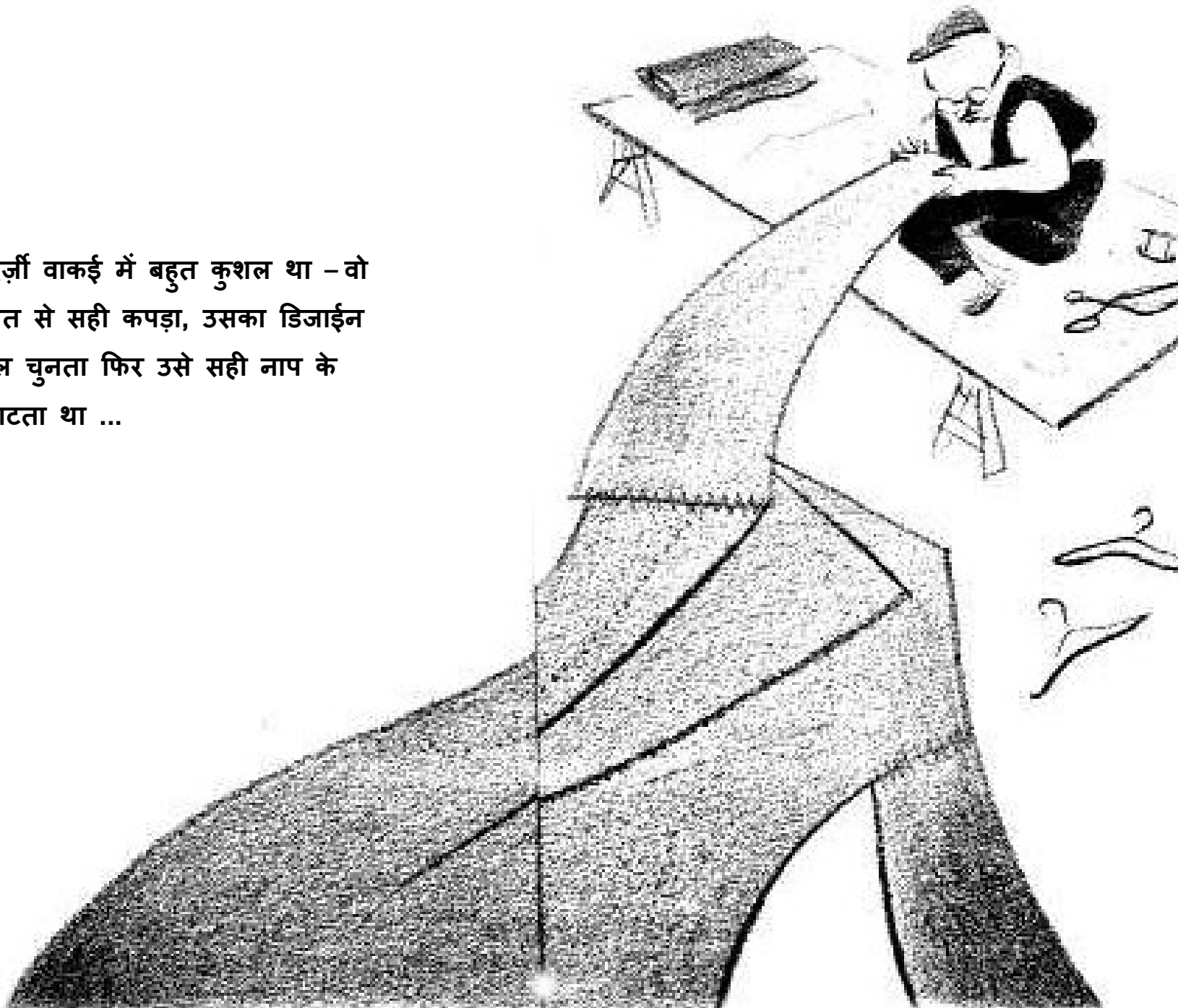


उस छोटे दर्ज़ी के लिए लोग बस  
एक नाप थे - ऊंचे, छोटे, मोटे या  
पतले.

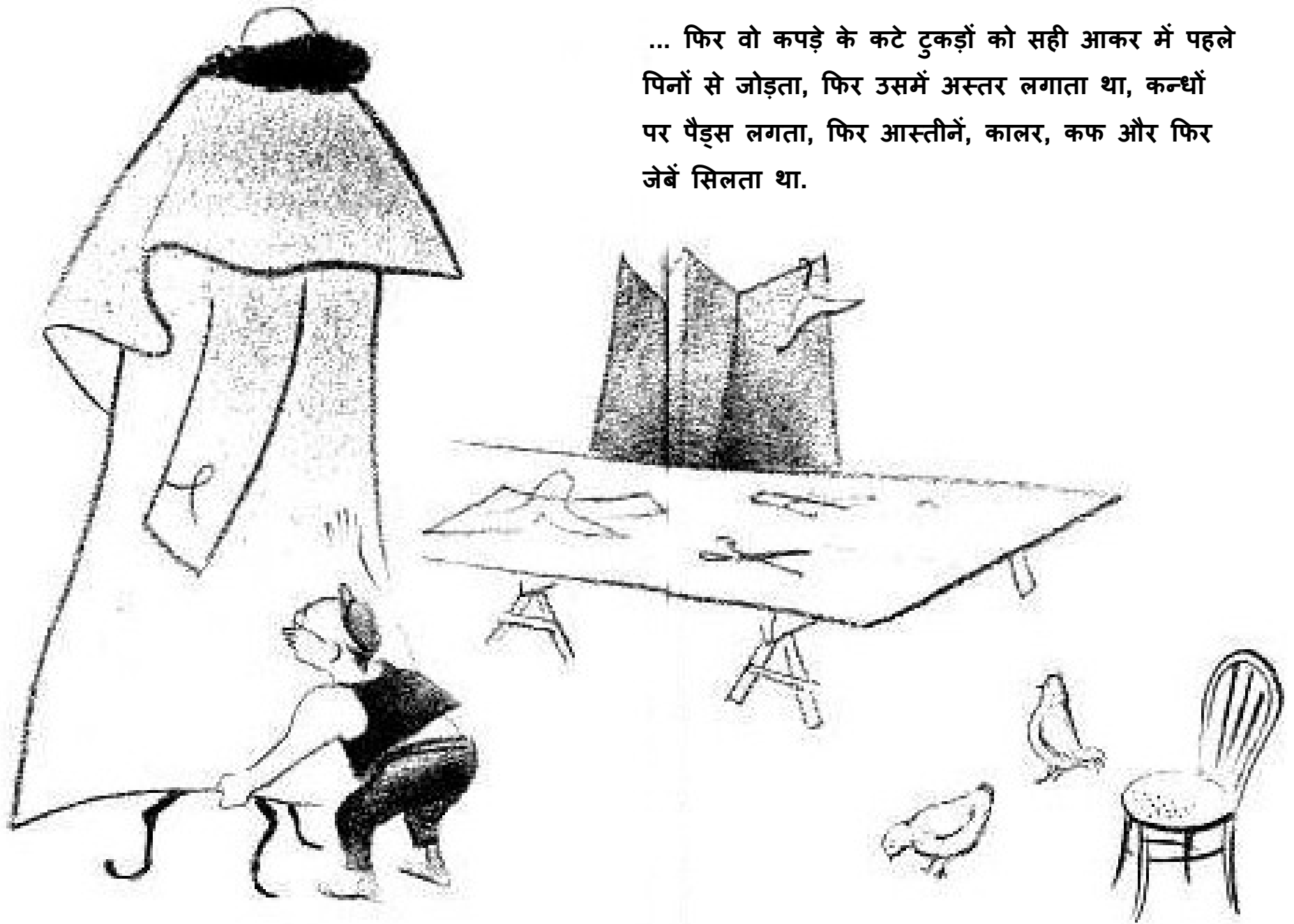
कपड़े उतारने के बाद, कसाई, फौजी, कवि और  
व्यापारी, संगीतकार और वकील, बावर्ची और  
टीचर में फर्क करना मुश्किल था.



वो छोटा दर्जी वाकई में बहुत कुशल था – वो  
बड़ी नफासत से सही कपड़ा, उसका डिजाईन  
और स्टाइल चुनता फिर उसे सही नाप के  
अनुसार काटता था ...

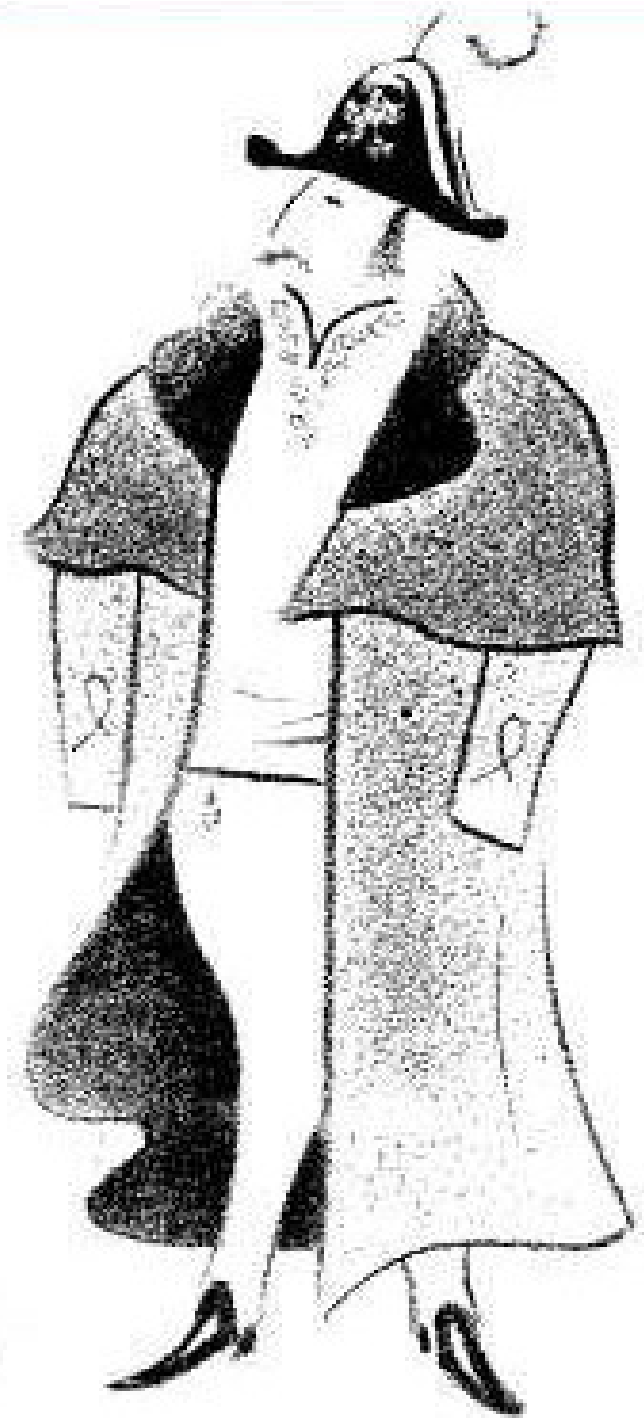


... फिर वो कपड़े के कटे टुकड़ों को सही आकर में पहले  
पिनो से जोड़ता, फिर उसमें अस्तर लगाता था, कन्धों  
पर पैड्स लगाता, फिर आस्तीनें, कालर, कफ और फिर  
जेबें सिलता था.



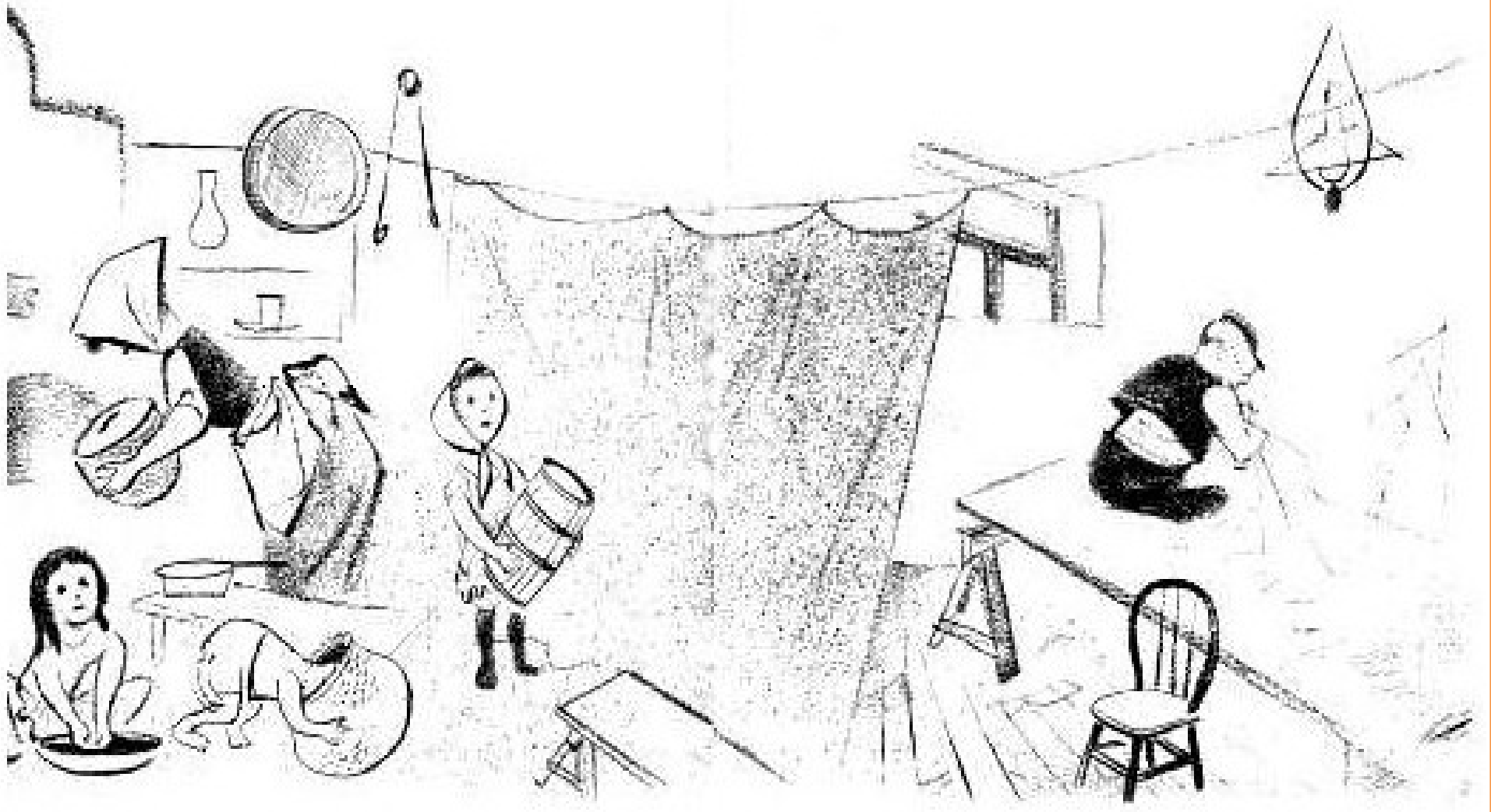


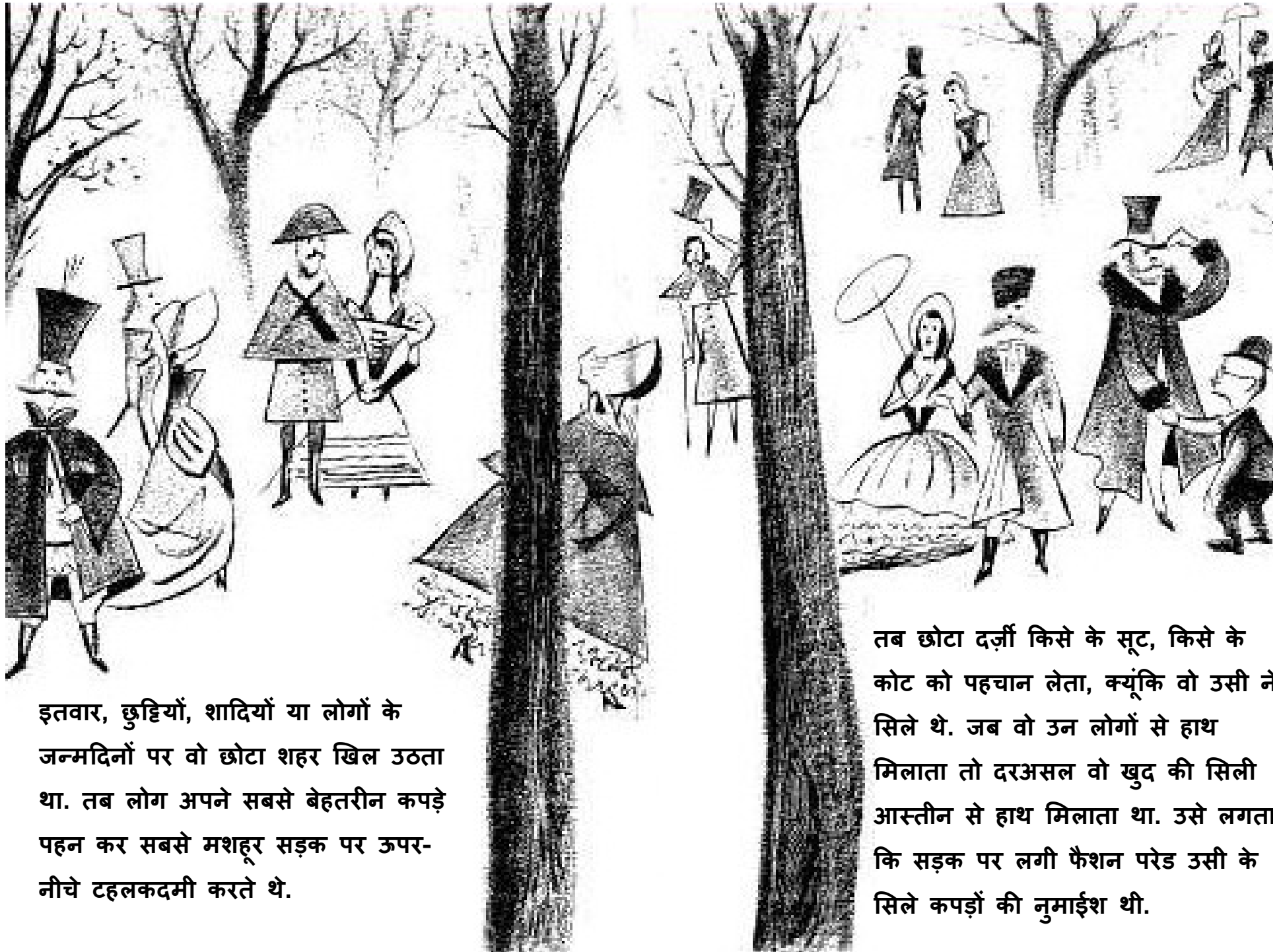
और जब छोटे दर्ज़ी के कपड़ों को मर्द  
और औरतें पहनते तो उनकी सुन्दरता  
और इज्ज़त में चार चाँद लग जाते.



वैसे वो छोटा दर्ज़ी गरीब था, पर उसके खुद के कई बच्चे थे – जिनमें कई बेटियां थीं. कुछ रईसजादों के बच्चे को ढेरों धन-दौलत विरासत में मिलती है, पर वो सबकुछ नहीं है.

क्या इन रईसजादों के बच्चे अपनी फटी पतलून पर कपड़े का पैबंद चिपका सकते थे? अगर छोटे दर्ज़ी जैसे लोग नहीं होते तो रईसजादों के बच्चों को बिना पतलून के घूमने को मजबूर होना पड़ता.





इतवार, छुट्टियों, शादियों या लोगों के जन्मदिनों पर वो छोटा शहर खिल उठता था. तब लोग अपने सबसे बेहतरीन कपड़े पहन कर सबसे मशहूर सड़क पर ऊपर-नीचे टहलकदमी करते थे.

तब छोटा दर्जी किसे के सूट, किसे के कोट को पहचान लेता, क्योंकि वो उसी ने सिले थे. जब वो उन लोगों से हाथ मिलाता तो दरअसल वो खुद की सिली आस्तीन से हाथ मिलाता था. उसे लगता कि सड़क पर लगी फैशन परेड उसी के सिले कपड़ों की नुमाईश थी.



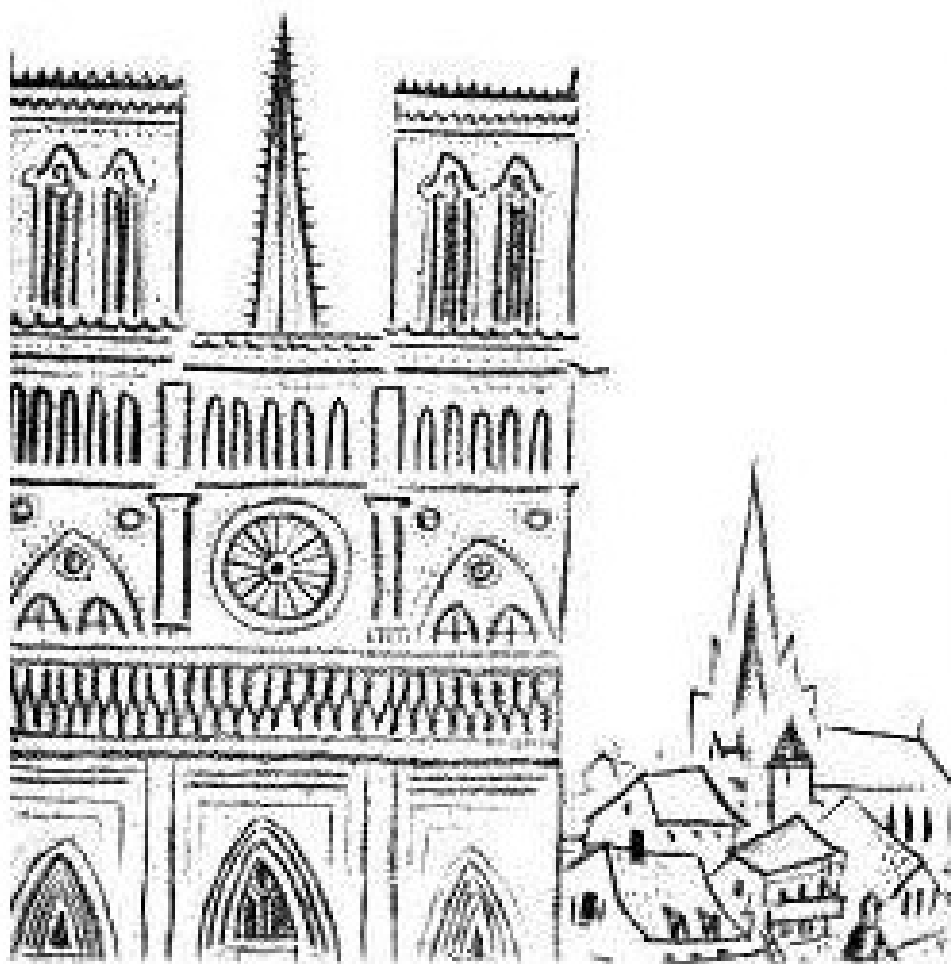
जहाँ भी लोग जाते वे छोटे दर्ज़ी के कपड़ों को निहारते और उसकी तारीफ करते. सब पूछते, “यह सुन्दर कपड़े किसने सिले हैं?” और उन कपड़ों को पहनने वाला बड़ी शान से कहता, “नोशी के छोटे दर्ज़ी ने.”



छोटे दर्जी के कपड़े पूरे देश में फैल गए. वो एक गाँव से दूसरे गाँव, एक शहर से दूसरे शहर, एक महानगर से दूसरे महानगर में और दूर-दराज़ के देशों में भी फैले. छोटे दर्जी के कपड़े परिंदों की तरह उड़े और फिर धूप और आज़ादी के इलाकों में जाकर बस गए.



फ्रांस में छोटे दर्जी को, “ला पेटित तैल्लयूर,”  
का खिताब दिया गया.





इटली में उसे, "इल सरतो पिक्कोल्लो," बुलाया गया.



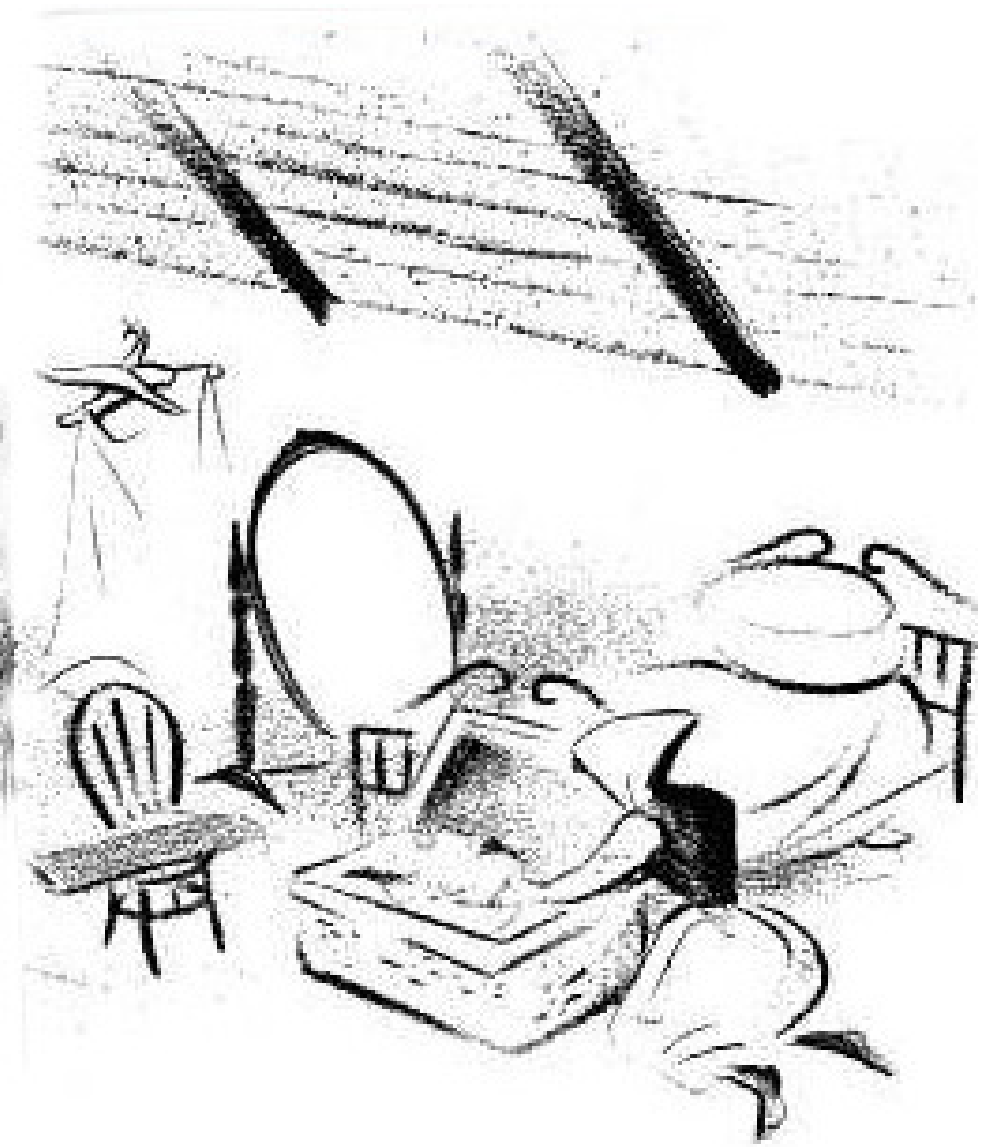


जर्मनी में छोटा दर्जी "देर क्लीन  
शिनाईडर," के नाम से जाना जाने लगा.



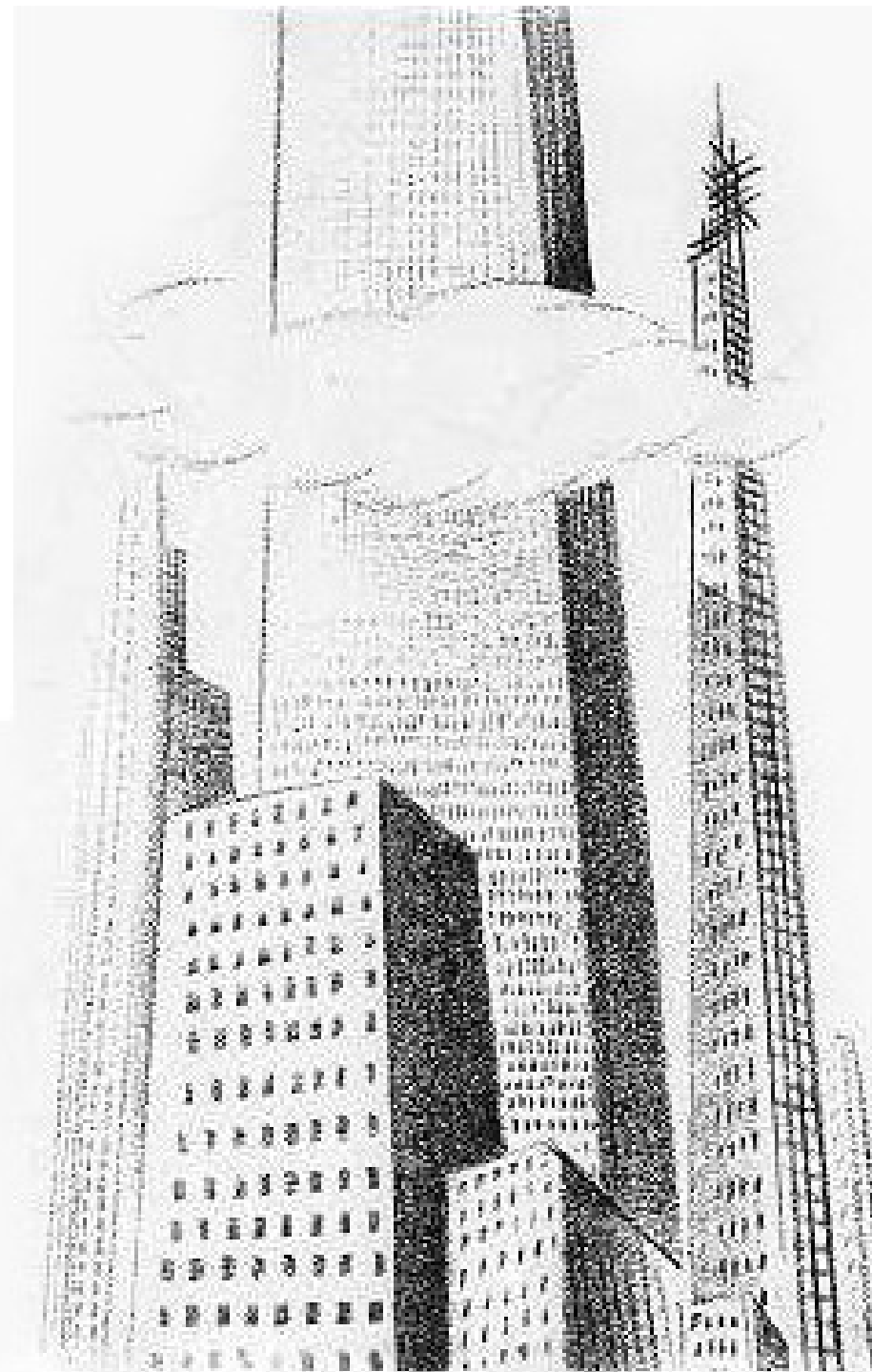
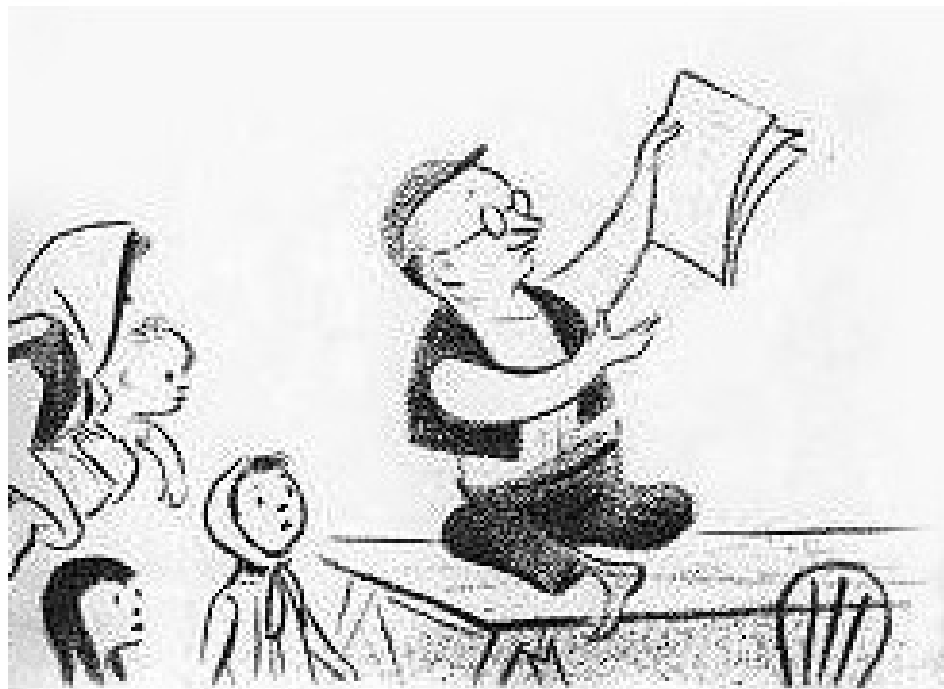
स्पेन में लोग उसे, "एल सस्त्रे पेकुएनो," बुलाते थे.

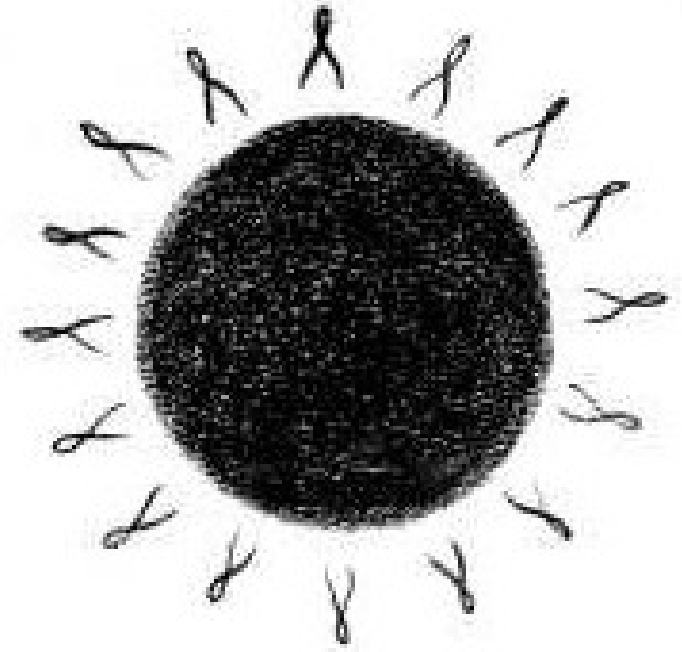




पर अपने छोटे शहर में वो सिर्फ छोटा दर्जी था. उसे अपनी शोहरत का कुछ अन्दाज़ नहीं था. वो हर समय पालथी मारे अपने अपनी छोटी सी दुकान में मेज़ पर काम में मशगूल रहता था.

एक दिन छोटे दर्जी को उसके एक दोस्त ने अमरीका से एक बड़ा प्रशंसा भरा पत्र लिखा. चिढ़ी में दोस्त ने छोटे दर्जी को सपरिवार अमरीका आने का न्योता दिया - जहाँ उसके कई दोस्त बसे थे, और बहुत खुश थे. अमरीका में ऊंची-ऊंची इमारतें थीं जो आसमान को छूती थीं.

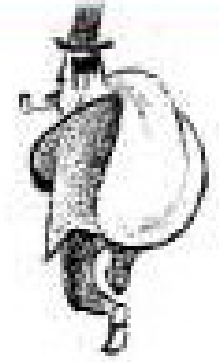




अमरीका में सूरज तेज़ी से चमकता था और  
वो समृद्धि का देश था. वहां टोकरियों में फल  
उगते थे, ड्रम में सेब का रस बनता था,  
बोरियों में आलू, और प्लेटें मक्खन लगी  
डबलरोटियों के लदी होती थीं.



जहाँ हरेक आदमी राजा जैसे अपने किले में रहता था.



जहाँ सड़कों पर सोने की परत चढ़ी थी.





वो देश मुक्त लोगों का वतन था,  
जहाँ लोगों के सपने साकार होते थे.

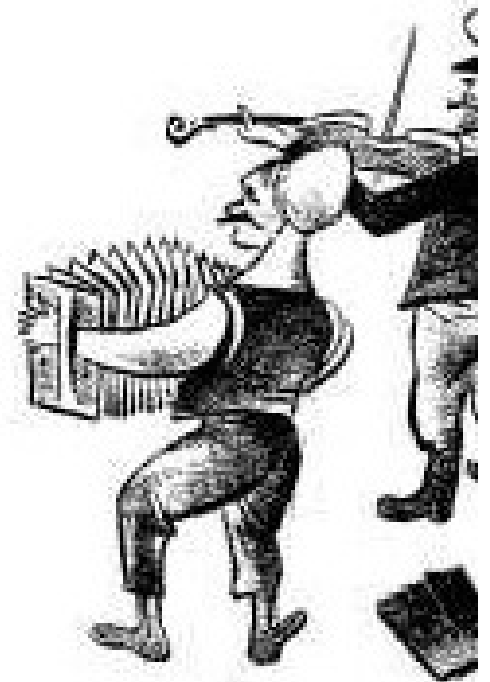


वो नए-नए अवसरों का देश था.



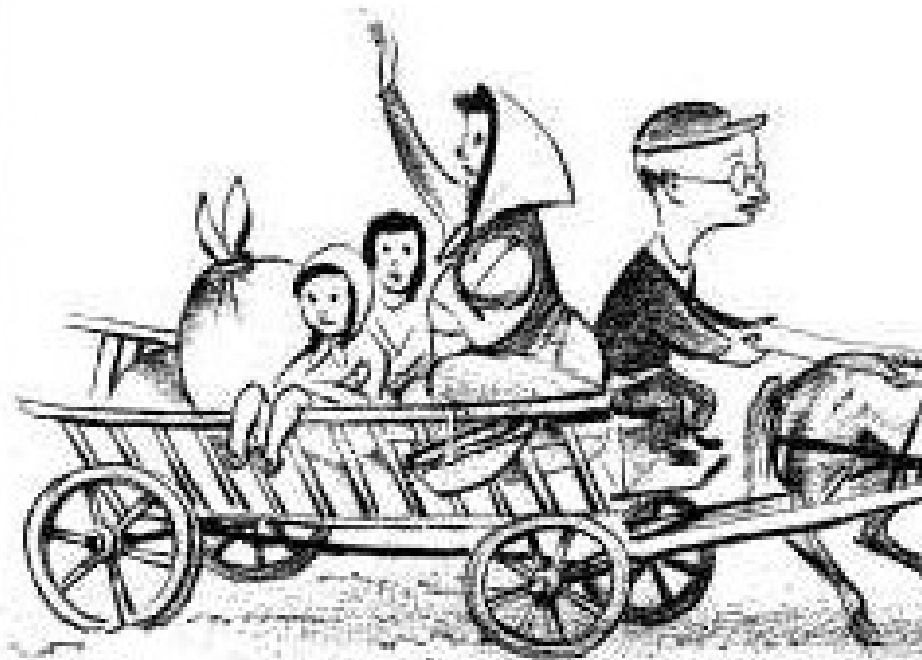


अमरीका में छोटे दर्ज़ी को एक घर मिलने का विश्वास दिलाया गया. दर्ज़ी के दोस्त, उसके पूरे परिवार के लिए पानी के जहाज़ के टिकट भेजने को तैयार थे. इससे पूरे शहर में एक खुशी की लहर फैली. छोटा दर्ज़ी और उसका पूरा परिवार अब अमरीका जा रहे थे – जो उम्मीद, समता और मुक्ति का देश था! शहर के बैंड ने लोक गीतों की धुनें बजायीं, जिन पर लोग नाचे. उन्होंने छोटे दर्ज़ी की किस्मत की भी वाहवाही की.





अगले दिन छोटा दर्जी अपने परिवार के साथ  
एक लम्बे सफ़र पर निकला.





वो एक गाँव से दूसरे गाँव गए. छोटे दर्जी को तब बहुत आश्चर्य हुआ जब उसने पाया कि हर गाँव में लोग उसे अच्छी तरह जानते थे.



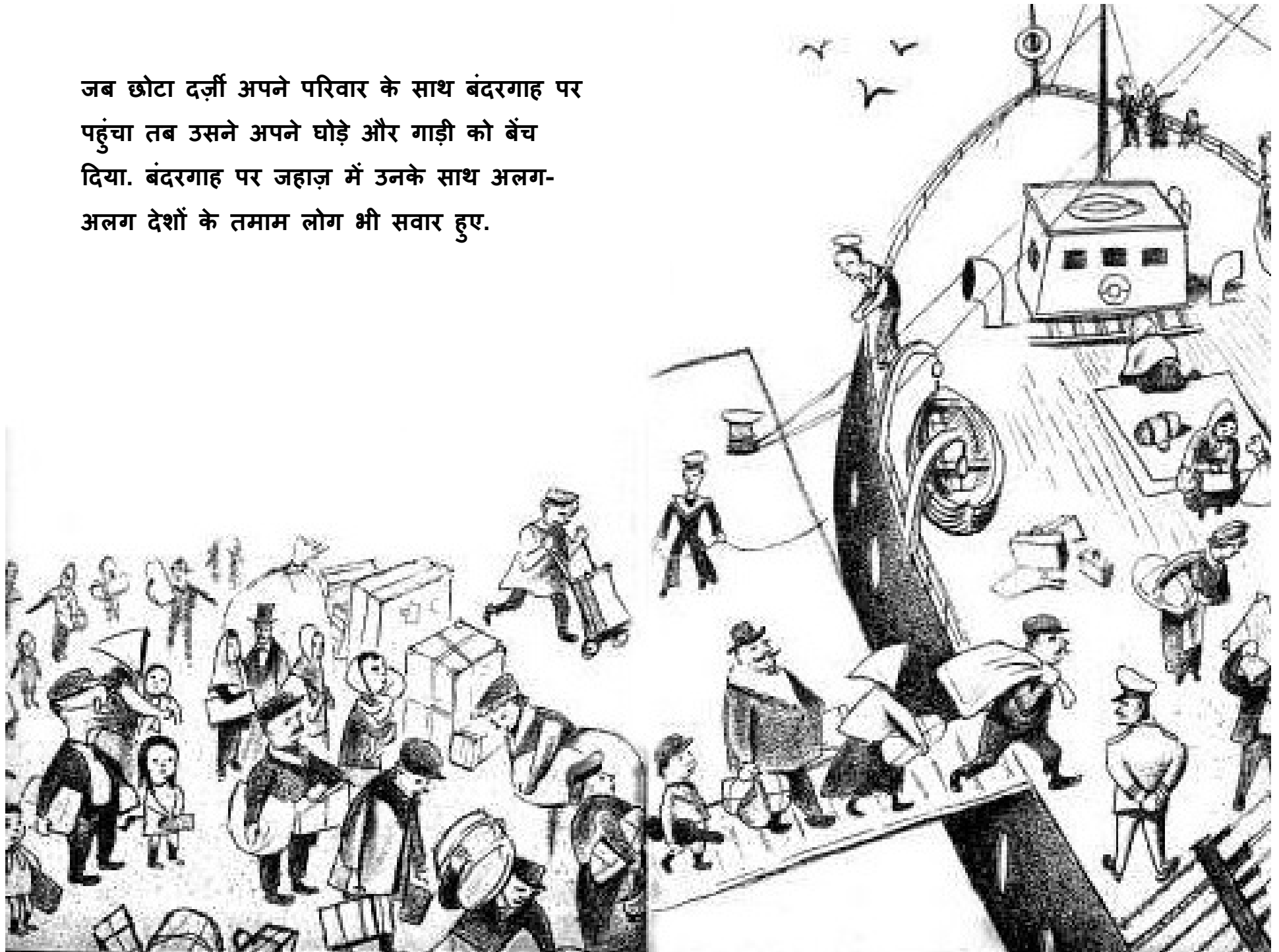
उनके गाँव से गुजरने वाले मुसाफिर अक्सर उस छोटे दर्जी द्वारा सिले कपड़े पहनते थे. इसलिए वे उस छोटे दर्जी के सिले कपड़ों से वाकिफ थे.

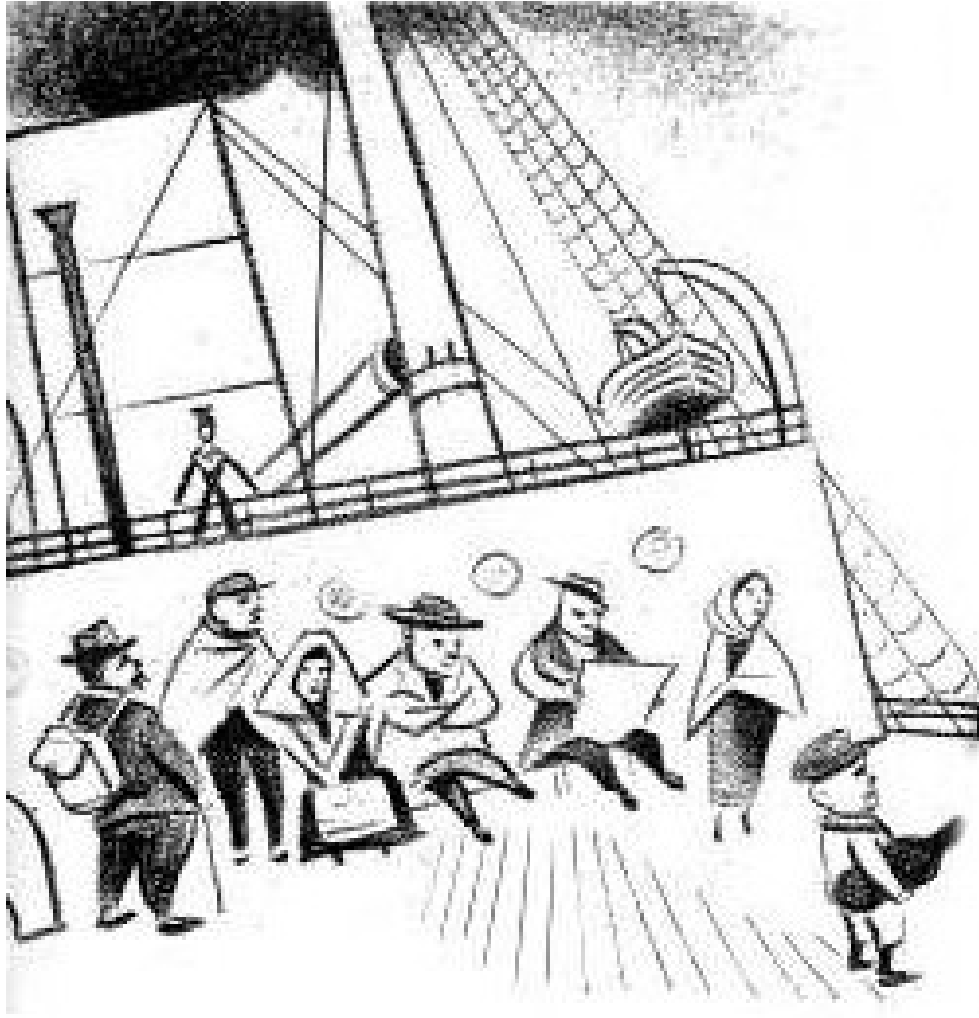


फिर छोटा दर्जी और उसका परिवार ..... खुशियों की सड़क पर आगे बढ़ रहे थे.



जब छोटा दर्जी अपने परिवार के साथ बंदरगाह पर पहुंचा तब उसने अपने घोड़े और गाड़ी को बेंच दिया. बंदरगाह पर जहाज़ में उनके साथ अलग-अलग देशों के तमाम लोग भी सवार हुए.





ऊंचे आदमी, पतले आदमी, छोटे आदमी, मोटे आदमी, औरतें, बच्चे सब एक बड़ी नाव में सवार थे और सभी एक नए देश में एक आज़ाद ज़िन्दगी शुरू करने जा रहे थे.

इन मुसाफिरों में बढई, राज-मिस्त्री, व्यापारी, वेटर, मोची, नर्तक, कसाई, गवईए, किसान, बावर्ची, छात्र, टोपी बनाने वाले, आविष्कारक और दर्जी भी शामिल थे.



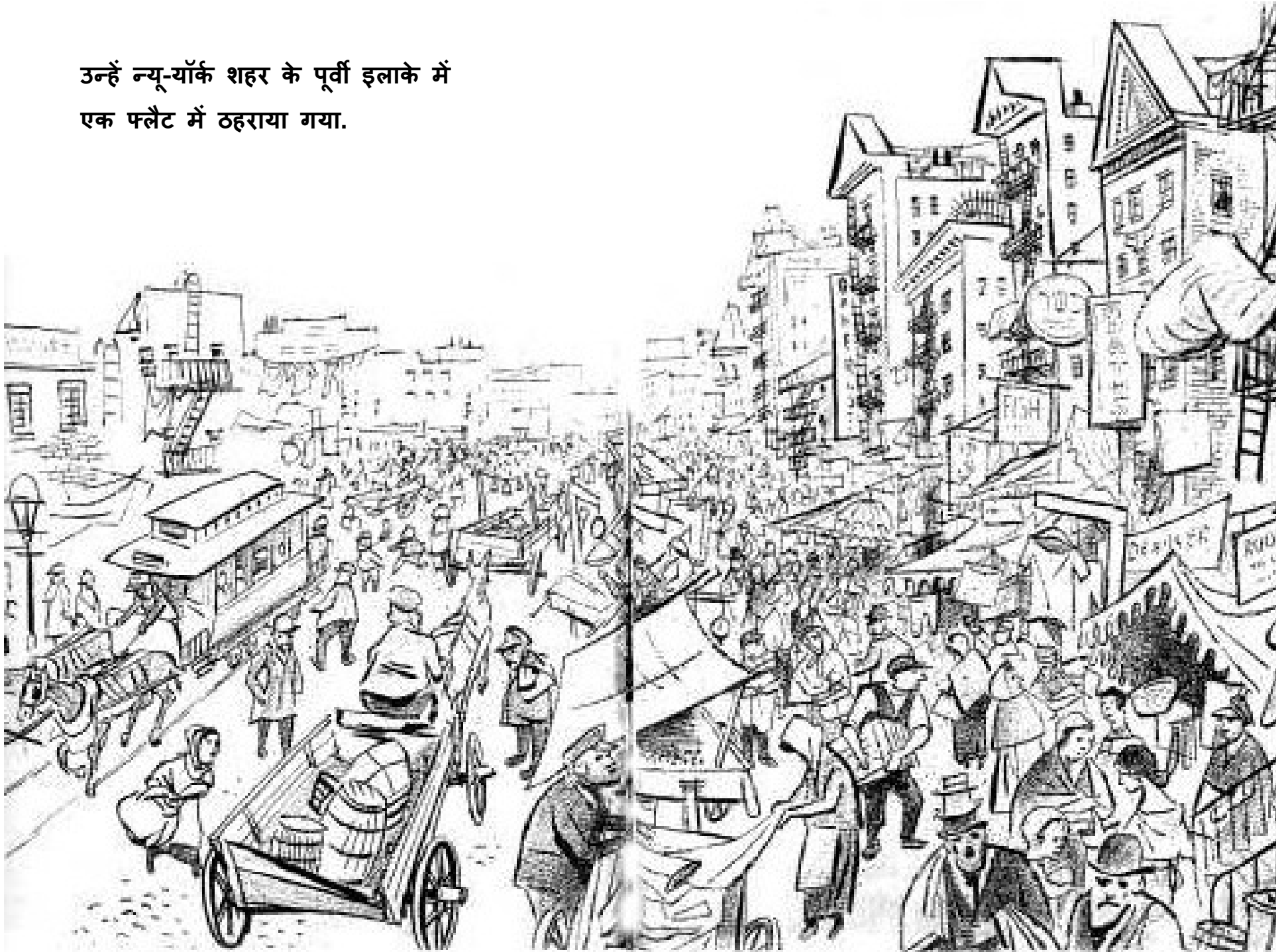
नए आये लोगों का उनके मित्रों और रिश्तेदारों  
ने न्यू-यॉर्क के बैटरी पार्क में स्वागत किया. यह  
इलाका एक ज़माने में कैसल-गार्डन के नाम से  
भी जाना जाता था.



छोटा दर्ज़ी अपने तमाम मित्रों को मिलकर  
बेहद खुश हुआ.

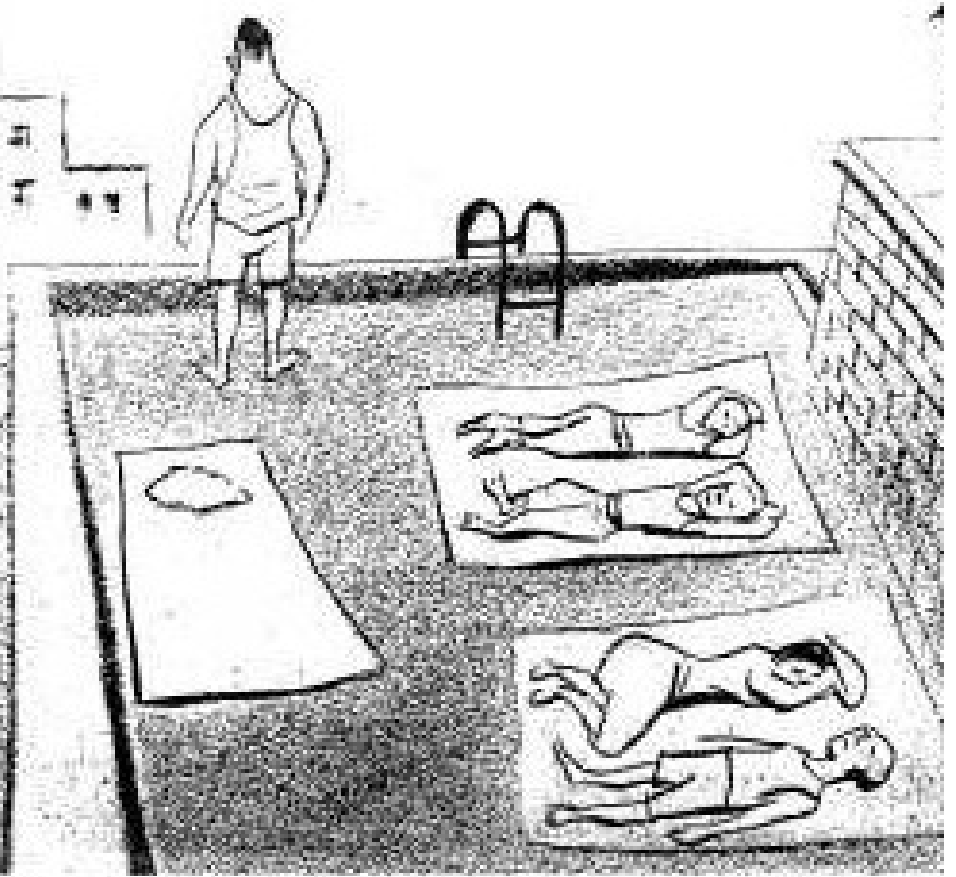


उन्हें न्यू-यॉर्क शहर के पूर्वी इलाके में  
एक फ्लैट में ठहराया गया.

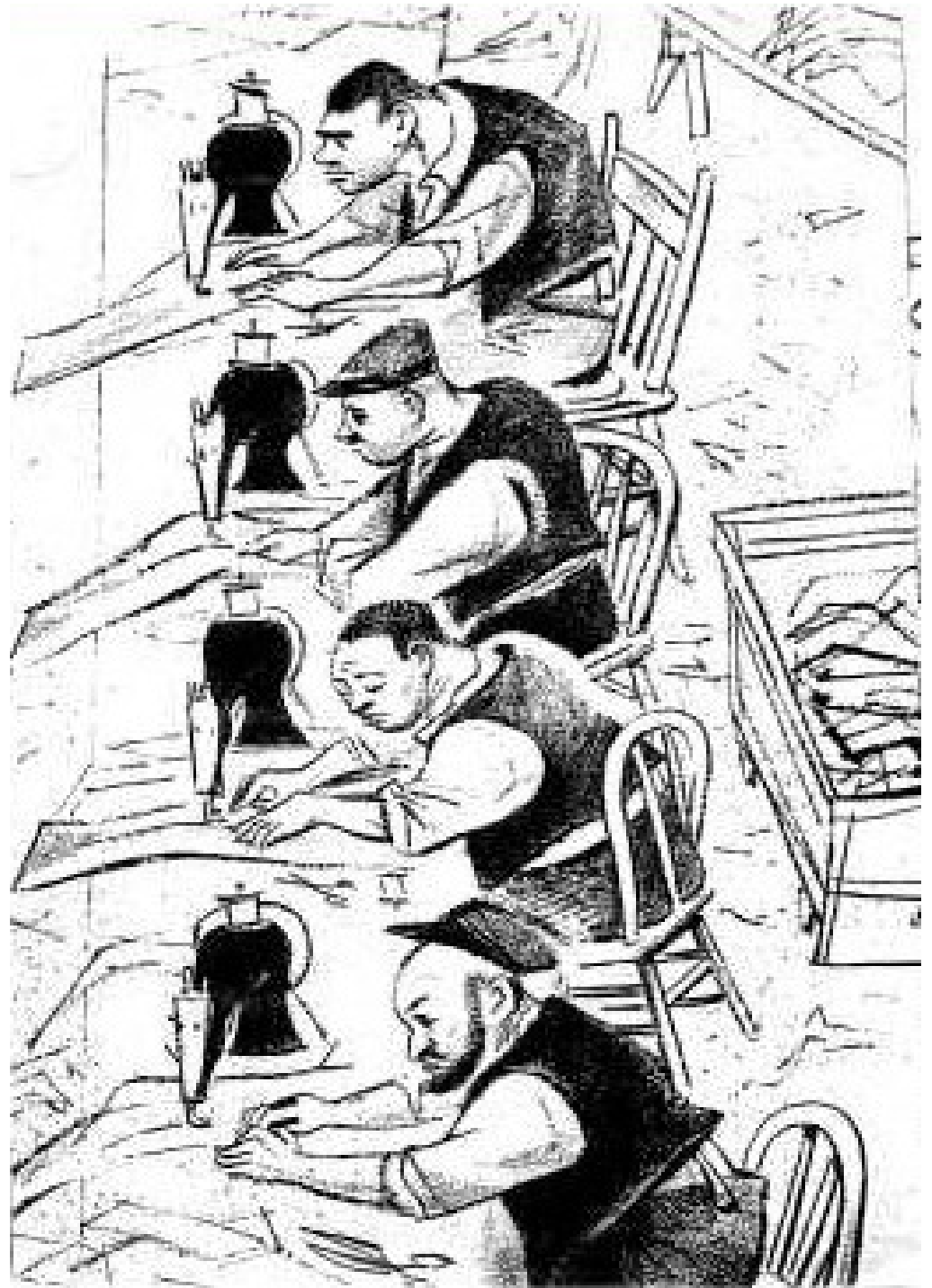




छोटे दर्ज़ी को बहुमंजिली इमारतें काफी अजीब लगीं. उसे देखकर आश्चर्य हुआ कि लोग एक-दूसरे के ऊपर रह रहे थे. गर्मियों की रात में लोग ठंडक के लिए ऊपर छत पर जाकर सोते थे.



अमरीका आने के कुछ ही दिनों बाद छोटे दर्जी को उसका एक दोस्त एक दुकान में ले गया. वहां बहुत से दर्जी मर्दों के कपड़े सिल रहे थे. उसे भी एक मशीन पर बैठा दिया गया – जहाँ उसे सिर्फ आस्तीनें बनानीं थीं. वहां बहुत सारी मशीनें लगीं थीं जो रोजाना सैकड़ों आस्तीनें बनाती थीं.





शाम को सारी आस्तीनों की गिनती होती थी ...

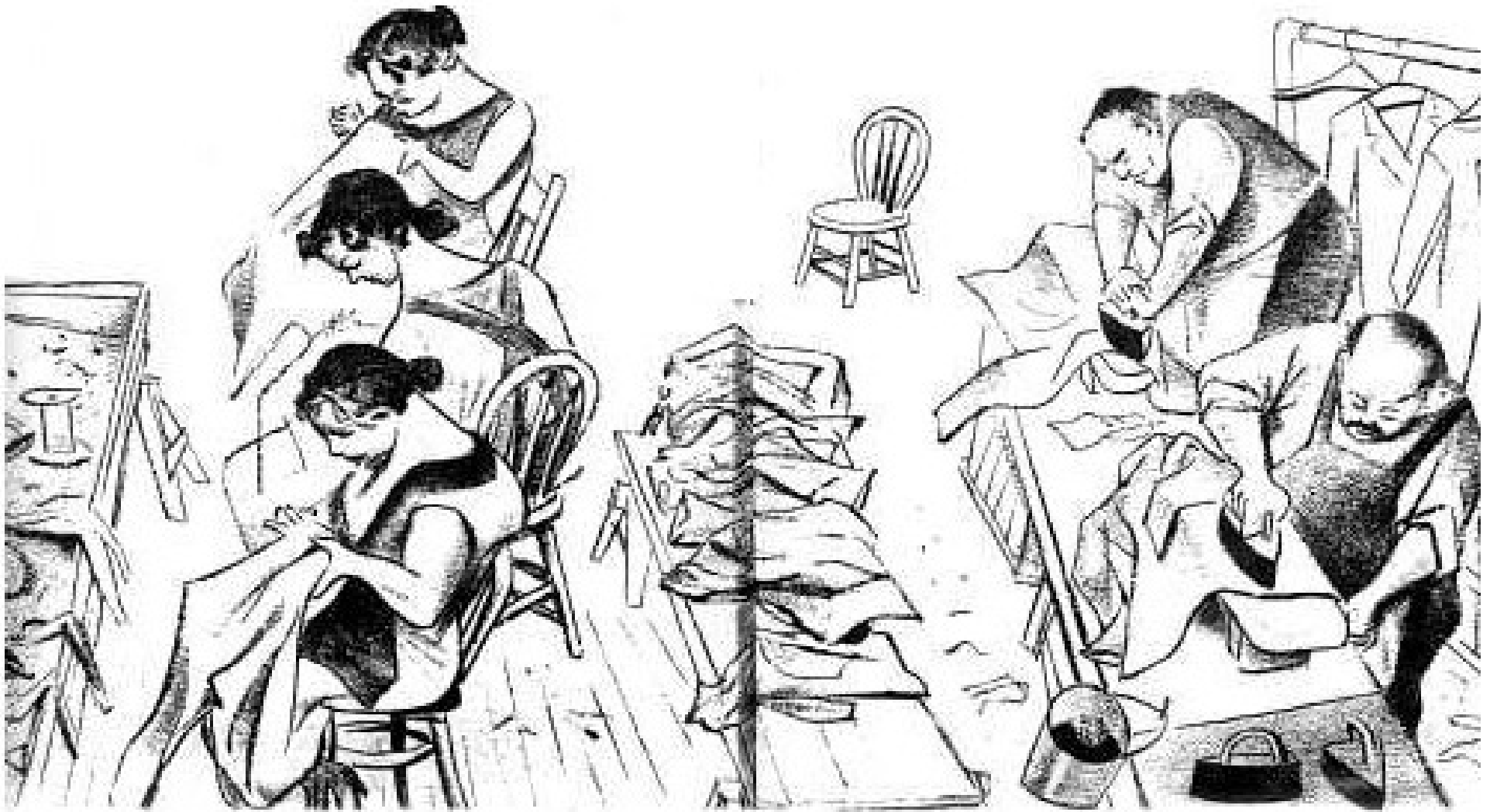
... फिर उन्हें दूसरे दर्जियों को दिया जाता था जो उन आस्तीनों को कमीज़ के साथ सिलते थे.





उसके बाद लाइन से औरतों की एक फौज उन कमीजों में काज करती, बटन के छेद बनाती और बटन सिलती थीं.

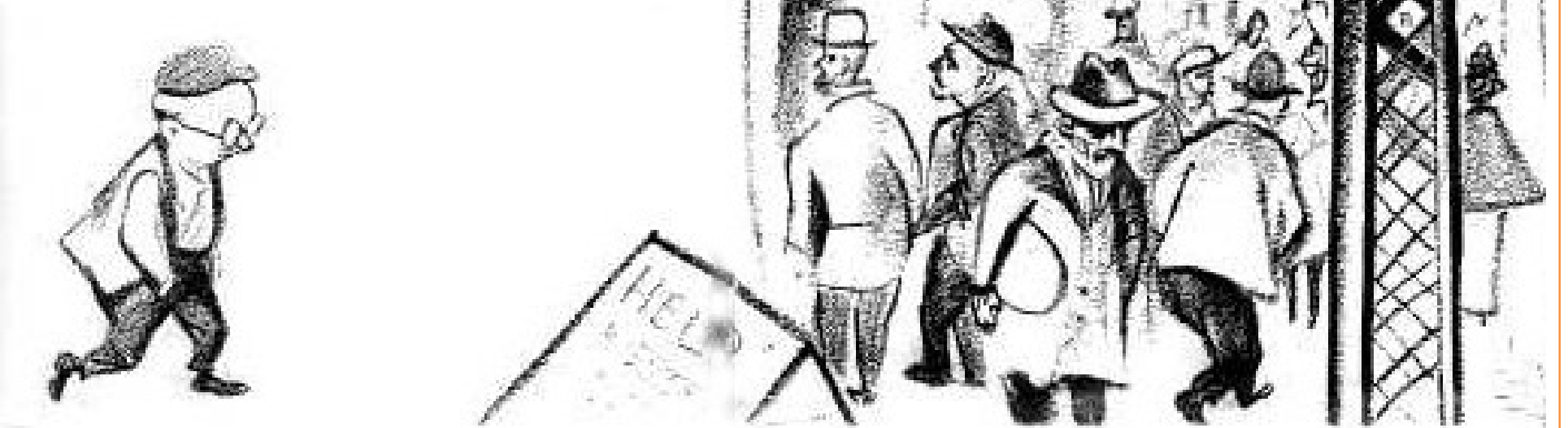
फिर उन कमीजों को इस्त्री किया जाता और फिर उन्हें रेडीमेड कपड़ों के स्टोर्स में बेंचने के लिए रखा जाता.



महीनों की मेहनत के बाद छोटे दर्जी ने ज़रूरत जिनती आस्तीनें बनाई. उसके बाद दुकान उस सीजन के लिए बंद कर दी गई. सारे दर्जी अब बिना काम के खाली बैठे थे - और अगले सीजन की नयी डिजाईन की कमीज़ों के लिए बुलाये जाने का इंतज़ार कर रहे थे.



छोटा दर्जी बिचारा क्या करता! वो काम की तलाश में सड़क पर टहलकदमी करने लगा. किसी भी कुशल कारीगर के लिए खाली बैठना सबसे बड़ा अभिशाप होता है. उसने हजारों आस्तीनें बनायीं थीं. सड़क पर चलते लोगों की कमीजों में वो उन आस्तीनों को पहचानने की कोशिश करता, जिससे उसे अपनी कार्यकुशलता पर कुछ गर्व होता. वो अपने शहर में यही करता था. पर इस बड़े शहर में उसे लोग और उनकी कमीजें सभी अजनबी लगतीं.

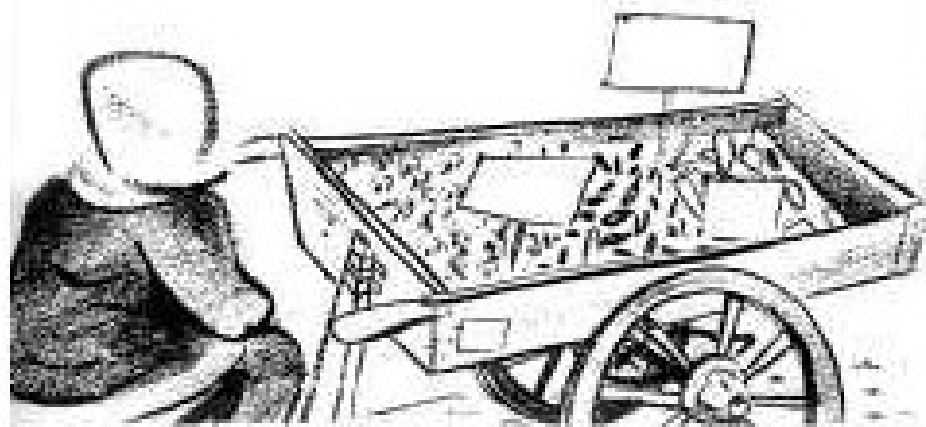


छोटा दर्ज़ी अपने उस दोस्त के पास गया जिसने अमरीका की शान-शौकत के बारे में उसे लिखा था. उसने अपने मित्र से पूछा, “कहाँ है वो सपनों का देश, कहाँ है वो सुख-वैभव और अवसरों का देश जिसके बारे में तुमने मुझे लिखा था?” उसके दोस्त ने उसे दिलासा दिलाते हुए कहा, “वो देश यही है, तुम्हारे चारों ओर है. यहाँ जो भी काबिल होगा और मेहनत से काम करेगा उसका सपना ज़रूर साकार होगा. चलो, हम यहाँ आसपास कुछ लोगों से मिलते हैं, उसके बाद तुम मेरी बात को ठीक तरह से समझोगे.”



छोटे दर्जी के दोस्त ने उसे एक रेहड़ी वाले से मिलाया. वो अपने ठेले पर कुछ चीज़ें बेंच रहा था. उसने रेहड़ी वाले से पूछा, "तुम्हारा सपना क्या है? तुम क्या बनना चाहते हो?" रेहड़ी वाले ने उत्तर दिया, "मौका मिलते ही मैं पहले एक छोटी दुकान खोलूँगा. फिर जब मेरा धंधा चल निकलेगा तो मैं शहर के अमीर इलाके में एक बड़ा स्टोर खोलूँगा."

और बहुत धन-दौलत कमाने के बाद मैं एक बड़ा डिपार्टमेंट स्टोर खोलूँगा."

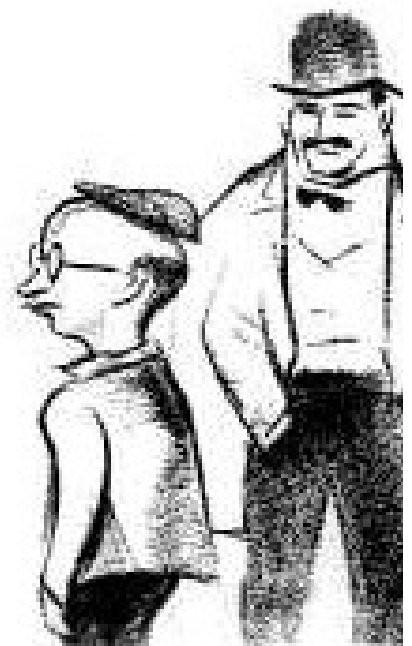




फिर छोटे दर्जी के दोस्त ने उसे एक अखबार बेंचने वाले लड़के से मिलवाया. उसने अखबार बेंचने वाले लड़के से पूछा, “तुम बड़े होने पर क्या करना चाहोगे?” “जब मैं बड़ा होऊंगा,” उस अखबार बेंचने वाले लड़के ने कहा, “तब मैं रिपोर्टर बनूँगा और अखबारों के लिए ख़बरें लिखा करूँगा. एक संपादक ने स्कूल पास करने के तुरंत बाद मुझे नौकरी देने का वादा किया है. शायद, एकदिन मैं खुद एक अखबार का मालिक होऊँगा.”



“देखो उस वेटर को जो कोई गीत गुनगुना रहा है. वो खुद अपने गाने लिखता है. शायद एक दिन वो अमरीका का मशहूर गीतकार बने. और वो सफाई कर्मचारी जो सड़क पर झाड़ू लगा रहा है वो शायद एक दिन हमारे शहर का मेयर बने ... तुम इन साधारण लोगों से बात करो, उनसे पूछो. हरेक के दिल में सैकड़ों अरमान छिपे होंगे.



आज़ादी से प्यार करने वाले हजारों लोग,  
जिन्होंने अपने दिल में एक अच्छे भविष्य का  
सपना संजोया है वे अमरीका में उस सपने को  
पूरा करने के लिए आये हैं. इस देश में लोगों  
को सोचने की पूरी आज़ादी है, वो दूसरों से  
सहमत या असहमत हो सकते हैं. यहाँ हरेक  
नस्ल, रंग, जाति के लोगों को आगे बढ़ने के  
सामान अवसर उपलब्ध हैं. इन्ही खासियतों की  
वजह से अमरीका एक महान राष्ट्र बना है.





उसके बाद छोटा दर्जी घर वापिस गया. उसने जो कुछ देखा-सुना था उसपर उसने खूब सोचा-विचारा. जिस इमारत में वो रहता था उसकी पहली मंजिल के पड़ोसी के पास एक संगीत-कार्यक्रम के दो मुफ्त टिकट थे. उस महिला में उसका बेटा भी अपना गायन प्रस्तुत करने वाला था.

उस महिला ने उस छोटे दर्जी से अपने बेटे के संगीत-कार्यक्रम के लिए एक नया सूट बनाने की फरमाइश की.



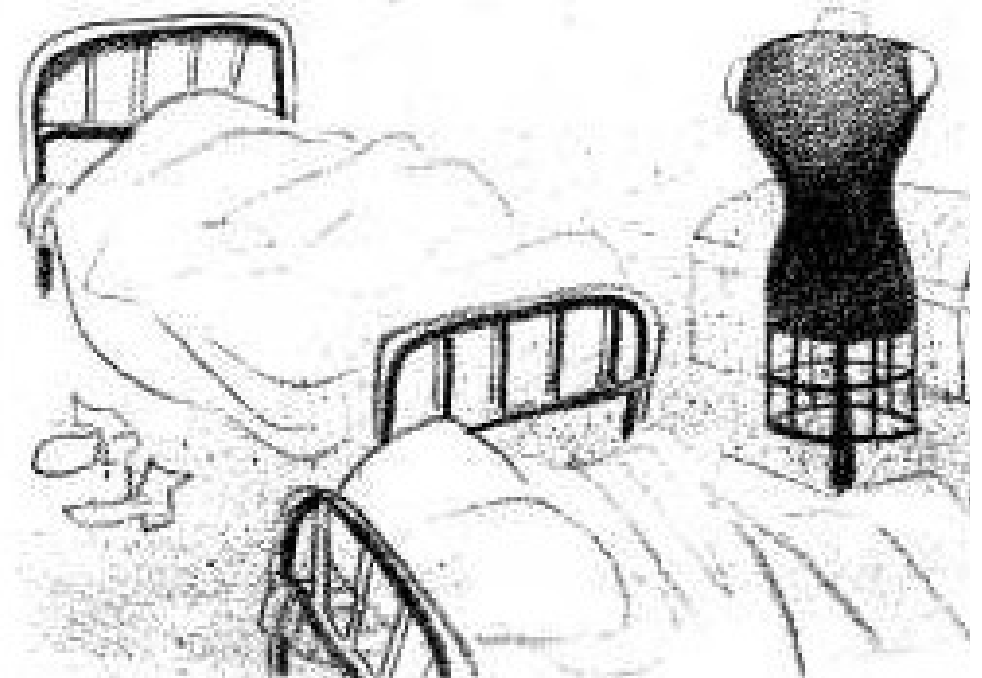


जब छोटा दर्जी अपने फ्लैट में घुसा तो उसने अपनी पत्नी को यह खुशखबरी सुनाई. उसने कहा कि उन्हें एक संगीत-कार्यक्रम के लिए निमंत्रण मिला है और वो उसके लिए नए कपड़े सिलेगा ...

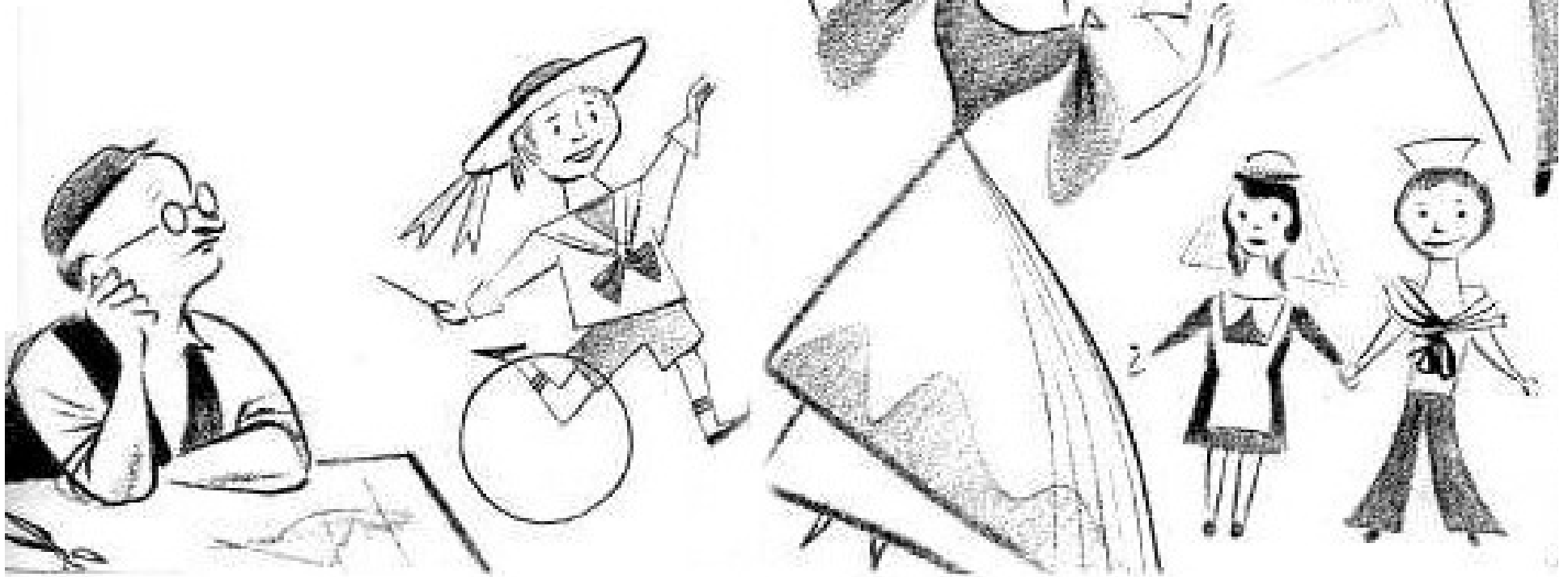
..उसे पड़ोसी महिला के लिए और उसके बेटे के लिए भी नए कपड़े सिलने हैं. अब आखिर में छोटे दर्जी ने अमरीका की असलियत को खोज निकाला था.



अब छोटा दर्ज़ी अपने छोटे कमरे में बैठकर रोजाना नए-नए डिजाईन बनाएगा. एक दिन शायद आलीशान फिफ्थ अवन्यू पर उसकी अपनी दुकान हो! वो भावी अमरीकी नागरिकों के लिए कपड़े बनाएगा.



उसके कपड़े लड़के-लड़कियां, मर्द-औरतें, नाविक,  
नर्स, संगीतकार, नर्तक सब पहनेंगे -क्योंकि वो  
पोशाकें बेहद खूबसूरत होंगी.





...हर पेशे के लोग, हर इलाके के लोग उस छोटे दर्जी के सिले कपड़े पहनेंगे ... और शहर के हर हिस्से से लोग ...





उस छोटे दर्जी के पास खिंचे चले आरेंगे.

## विलियम विक्टर “बिल” ग्रोपर

(1897-1977) एक अमरीकी कार्टूनिस्ट, पेंटर और राजनैतिक कार्यकर्ता थे. उन्होंने कई वामपंथी पत्र-पत्रिकाओं के लिए चित्र बनाये. उनके माता-पिता यहूदी थे और रोमानिया और यूक्रेन से आये थे. वे गरीब थे और एक कपड़े के कारखाने में मजदूरी करते थे. “बिल” ग्रोपर के पिता आठ भाषाएँ जानते थे पर फिर भी उन्हें उनकी क़ाबलियत के लायक कोई रोज़गार नहीं मिला.